



ଓଡ଼ିଶାର ସମସ୍ତ ପୂର୍ବ ବର୍ଷର ପ୍ରଶ୍ନ ଉତ୍ତର ପାଇଁ
Download “**Tech Of World**” App



Call/WhatsApp-
8596976190

High School Teacher TGT Sanskrit Previous Year Question **FREE DEMO**

10 Toughest Sanskrit Grammar & Literature Questions (2021 –
2022) with Full Solutions



SANSKRIT – 10 TOUGHEST PYQ

Hand-picked from 2 Sanskrit teacher papers (DSE Odisha TGT Sanskrit 2021 and Classical Teacher Sanskrit 2022) – with the same detailed solutions you get in the full pack.

Q-1 दत्तदृष्टिः – व्यासवाक्येन सह समासः शुद्धं अस्ति।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2021]

- (A) कोऽपि नास्ति
- (B) दत्तः दृष्टिः यस्य सः इति बहुव्रीहि-समासः
- (C) दत्तश्च दृष्टिश्च इति द्वन्द्व-समासः
- (D) दत्ता दृष्टिः येन सः इति बहुव्रीहि-समासः

ANS- (D) दत्ता दृष्टिः येन सः इति बहुव्रीहि-समासः

व्याख्या: 'दत्तदृष्टिः' का विग्रह है 'दत्ता दृष्टिः येन सः'। 'दृष्टि' स्त्रीलिंग है, इसलिए विग्रह में 'दत्ता' आता है; समास में पुंवद्भाव से 'दत्त' रह जाता है। यह समस्त पद किसी अन्य व्यक्ति का विशेषण है, इसलिए बहुव्रीहि समास है।

नियम: 'अनेकमन्यपदार्थे' से बहुव्रीहि होता है और 'स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्...' से पूर्वपद 'दत्ता' पुंवत् 'दत्त' बनता है।

अन्य विकल्प:

- (A) कोऽपि नास्ति: इसका अर्थ 'कोई नहीं है' है, यह समास-विग्रह नहीं है।
- (B) दत्तः दृष्टिः यस्य सः: यहाँ 'दत्तः' पुल्लिंग है, पर 'दृष्टिः' स्त्रीलिंग है, इसलिए लिंग मेल नहीं खाता।
- (C) दत्तश्च दृष्टिश्च: यह द्वन्द्व का विग्रह है, जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं।

Q-2 बहु + ईयसुन् किं भवति?

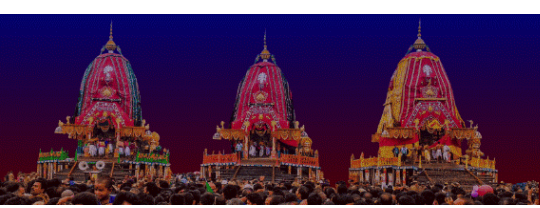
[DSE Odisha TGT Sanskrit 2021]

- (A) भूयंसी
- (B) भूयिष्ठम्
- (C) भूयसी
- (D) भूयस्

ANS- (D) भूयस्

व्याख्या: 'बहु' के बाद ईयसुन् आने पर 'बहु' के स्थान पर 'भू' आदेश होता है। साथ ही प्रत्यय 'ईयस्' के 'ई' का लोप होता है। भू + यस् = भूयस्, जिसका अर्थ है 'अधिक'।

नियम: 'बहोर्लोपो भू च बहोः' — बहु से परे ईयसुन् के 'ई' का लोप होता है और बहु को 'भू' आदेश होता है।



अन्य विकल्प:

- (A) भूयंसी: इसमें बीच में अनुस्वार है; ऐसा शुद्ध रूप नहीं बनता।
(B) भूयिष्ठम्: यह बहु + इष्ठन् से बनता है और 'सबसे अधिक' अर्थ देता है।
(C) भूयसी: यह भूयस् में स्त्रीलिङ्ग का प्रत्यय लगने पर बनता है।

Q-3 त्रिविक्रमभट्टस्य नामान्तरः कः अस्ति।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2021]

- (A) गङ्गा-त्रिविक्रम
(B) यमुना-त्रिविक्रम
(C) भट्टविक्रम
(D) विक्रमभट्ट

ANS- (B) यमुना-त्रिविक्रम

व्याख्या: 'नलचम्पू' के रचयिता त्रिविक्रमभट्ट हैं। उन्हें यमुना-त्रिविक्रम भी कहा जाता है; यह नाम यमुना पर लिखे उनके एक प्रसिद्ध श्लोक से जुड़ा माना जाता है। नलचम्पू को दमयन्तीकथा भी कहते हैं।

मुख्य बिंदु:

- ✦ रचना: नलचम्पू नल और दमयन्ती की कथा पर आधारित है।
- ✦ आश्रयदाता: वे राष्ट्रकूट राजा इन्द्र तृतीय के आश्रित कवि माने जाते हैं।
- ✦ काल: त्रिविक्रमभट्ट दसवीं शताब्दी के कवि माने जाते हैं।

अन्य विकल्प:

- (A) गङ्गा-त्रिविक्रम — यह नाम त्रिविक्रमभट्ट के लिए प्रचलित नहीं है; उनका नामान्तर यमुना से जुड़ा है।
(C) भट्टविक्रम — इसमें 'भट्ट' और 'विक्रम' दोनों शब्द हैं, पर यह त्रिविक्रमभट्ट का प्रचलित नामान्तर नहीं है।
(D) विक्रमभट्ट — नाम का क्रम बदला हुआ रूप है, जो इस कवि के लिए प्रचलित नहीं है।

Q-4 वापीं स्नातुमितो गतासि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम् इति कस्मिन् ग्रन्थे अस्ति

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2021]

- (A) शृङ्गारशतके
(B) वैराग्यशतके
(C) अमरुशतके
(D) नीतिशतके

ANS- (C) अमरुशतके

व्याख्या: 'वापीं स्नातुमितो गतासि...' श्लोक अमरुशतक का माना गया है। अमरुशतक के रचयिता अमरुक (अमरु) हैं। यह शृङ्गार रस प्रधान मुक्तक काव्य है। इसमें नायक-नायिका के प्रेम, रूठने और मनाने के चित्र मिलते हैं।



मुख्य बिंदु:

- ♦ **प्रशंसा:** प्रसिद्ध उक्ति है — 'अमरुककवेरेकः श्लोकः प्रबन्धशतायते', अर्थात् अमरु का एक श्लोक सौ प्रबन्धों के बराबर है।
- ♦ **श्लोक-संख्या:** इसमें लगभग सौ श्लोक हैं; अलग-अलग पाठों में संख्या कुछ बदलती है।
- ♦ **टीका:** अर्जुनवर्मदेव ने इस पर 'रसिकसञ्जीवनी' नामक टीका लिखी।

अन्य विकल्प:

- (A) **शृङ्गारशतके** — भर्तृहरि के शतकत्रय का वह भाग है, जिसमें प्रेम और सौन्दर्य के श्लोक हैं।
 (B) **वैराग्यशतके** — भर्तृहरि के शतकत्रय का वह भाग है, जिसमें संसार से विरक्ति की शिक्षा है।
 (D) **नीतिशतके** — भर्तृहरि के शतकत्रय का वह भाग है, जिसमें नीति और व्यवहार के उपदेश हैं।

Q-5 स्त्रीलिङ्गे चतसृणां रूपं कुत्र भवति

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

- (A) चतुर् शब्दस्य पञ्चमी विभक्तौ
 (B) चतुर् शब्दस्य षष्ठी विभक्तौ
 (C) चतुर् शब्दस्य सप्तमी विभक्तौ
 (D) एतेषु कोऽपि नास्ति।

ANS- (B) चतुर् शब्दस्य षष्ठी विभक्तौ

व्याख्या: 'चतसृणाम्' स्त्रीलिङ्ग 'चतुर्' शब्द का रूप है। यह षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में आता है। स्त्रीलिङ्ग में चतुर् के रूप 'चतस्रः', 'चतसृभ्यः', 'चतसृणाम्', 'चतसृषु' चलते हैं।

नियम: सूत्रः त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ — स्त्रीलिङ्ग में 'चतुर्' को 'चतसृ' आदेश होता है; षष्ठी बहुवचन में 'आम्' को 'नुट्' आगम होकर 'चतसृणाम्' बनता है।

अन्य विकल्प:

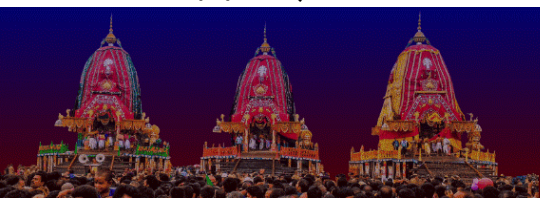
- (A) **चतुर् शब्दस्य पञ्चमी विभक्तौ:** पंचमी बहुवचन में रूप 'चतसृभ्यः' बनता है।
 (C) **चतुर् शब्दस्य सप्तमी विभक्तौ:** सप्तमी बहुवचन में रूप 'चतसृषु' बनता है।
 (D) **एतेषु कोऽपि नास्ति:** 'चतसृणाम्' षष्ठी का रूप है, जो विकल्प (B) में है।

► **Liked these solutions?** This demo has only 10 of the 160 Sanskrit subject questions from 2 Sanskrit teacher papers. Get all 47 High School Teacher PYQ papers (RHT, LTR & SSB) + 1,157 PYQ Tests in the COMBO (63000 PYQ) package of the [Tech Of World App](#) – only ₹324 with coupon code **TODAY**.

Q-6 कुमारी शब्दे कः प्रत्ययः अस्ति।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

- (A) डीप्
 (B) डीष्
 (C) डीन्



(D) एतेषु कोऽपि नास्ति।

ANS- (A) डीप्

व्याख्या: 'कुमार' शब्द में स्त्रीलिंग बनाने के लिए **डीप्** प्रत्यय लगता है। इसमें 'ई' शेष रहता है और 'कुमारी' शब्द बनता है। यह कन्या की प्रथम अवस्था को बताता है।

नियम: सूत्र: वयसि प्रथमे — प्रथम अवस्था (कुमार अवस्था) के अर्थ में अकारांत शब्द से स्त्रीलिंग में डीप् प्रत्यय होता है।

अन्य विकल्प:

(B) डीष्: यह भी स्त्रीप्रत्यय है, जैसे 'गौरादि' शब्दों में गौरी बनता है।

(C) डीन्: यह स्त्रीलिंग का प्रत्यय है, जैसे 'शार्ङ्गरव' शब्द से शार्ङ्गरवी बनता है।

(D) एतेषु कोऽपि नास्ति: यहाँ शुद्ध प्रत्यय विकल्प (A) में है।

Q-7 शप्यम् इत्यत्र शुद्धः प्रत्ययः अस्ति।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

(A) शप्+क्यप्

(B) शप्+यत्

(C) शप्+ष्यञ्

(D) एतेषु कोऽपि नास्ति।

ANS- (B) शप्+यत्

व्याख्या: 'शप्यम्' में **यत्** प्रत्यय है। शप् धातु पवर्गान्त है और उसकी उपधा में 'अ' है। इसलिए शप् + यत् = **शप्यम्** बनता है, जिसका अर्थ है 'शाप के योग्य'।

नियम: पोरदुपधात् (3.1.98) — अकार उपधा वाली पवर्गान्त धातु से यत् प्रत्यय होता है; जैसे शप्य, लभ्य।

अन्य विकल्प:

(A) शप्+क्यप्: क्यप् प्रत्यय इ, स्तु, शास्, वृ, ट, जुष् धातुओं से लगता है; जैसे स्तु + क्यप् = स्तुत्य।

(C) शप्+ष्यञ्: ष्यञ् तद्धित प्रत्यय है, कृदन्त नहीं; जैसे ब्राह्मण + ष्यञ् = ब्राह्मण्यम्।

(D) एतेषु कोऽपि नास्ति: यहाँ यह विकल्प नहीं बनता, क्योंकि (B) में ही रूप सिद्ध होता है।

Q-8 उदयनवेन्दुसवर्णावासवदत्ता बलस्य त्वाम् पद्मावतीर्णपूर्णौ वसन्तकम्रौ भुजौ पाताम् इत्यत्र मङ्गलाचरणे भासेन कस्य स्मरणं कृतम्

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

(A) श्रीकृष्णस्य

(B) शिवस्य



- (C) बलरामस्य
(D) विष्णोः

ANS- (C) बलरामस्य

व्याख्या: यह श्लोक भास के नाटक **स्वप्नवासवदत्तम्** का मङ्गलाचरण है। इसमें 'बलस्य' पद से **बलराम** की भुजाओं का स्मरण किया गया है। श्लेष से इसमें उदयन, वासवदत्ता, पद्मावती और वसन्तक — नाटक के पात्रों के नाम भी आ गए हैं। बलराम श्रीकृष्ण के बड़े भाई थे और हल धारण करते थे।

मुख्य बिंदु:

- ♦ **कवि:** भास संस्कृत के प्राचीन नाटककार हैं।
- ♦ **नाटक-संग्रह:** भास के तेरह नाटक बीसवीं सदी के आरंभ में गणपति शास्त्री ने खोजकर प्रकाशित किए।
- ♦ **उल्लेख:** कालिदास ने मालविकाग्निमित्र में भास का आदर से नाम लिया है।

अन्य विकल्प:

- (A) **श्रीकृष्णस्य** — श्रीकृष्ण बलराम के छोटे भाई हैं; उनका नाम यहाँ नहीं है।
(B) **शिवस्य** — शिव का स्मरण अनेक नाटकों के नान्दी-श्लोकों में मिलता है।
(D) **विष्णोः** — विष्णु के अवतार कृष्ण और बलराम दोनों माने जाते हैं।

Q-9 आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्। बलवदपि शिक्षितानां आत्मन्यप्रत्ययं चेतः। पद्यमिदं अभिज्ञानशाकुन्तले केन कथितम्।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

- (A) नट्या
(B) शकुन्तलया
(C) सूत्रधारेण
(D) एतेषु कोऽपि नास्ति।

ANS- (C) सूत्रधारेण

व्याख्या: 'आ परितोषाद् विदुषाम्' श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रस्तावना में आता है। इसे **सूत्रधार** कहता है। वह नटी से अपनी बात कहता है और विद्वानों के सन्तोष को कला की सफलता मानता है।

मुख्य बिंदु:

- ♦ **कवि:** अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता कालिदास हैं।
- ♦ **अंक:** यह नाटक सात अंकों का है।
- ♦ **प्रसिद्ध उक्ति:** 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला'।

अन्य विकल्प:



- (A) नट्या — नटी सूत्रधार की सहयोगी है और उसी से बातचीत होती है।
(B) शकुन्तलया — शकुन्तला नाटक की नायिका है; वह प्रस्तावना में नहीं आती।
(D) एतेषु कोऽपि नास्ति — यह विकल्प नहीं बनता, क्योंकि कथन सूत्रधार का है।

Q-10 गीतगोविन्दस्य प्रथमसर्गस्य नाम किम् अस्ति।

[DSE Odisha TGT Sanskrit 2022]

- (A) सामोद-दामोदरः
(B) धृष्ट-वैकुण्ठः
(C) नागरनारायणः
(D) एतेषु कोऽपि नास्ति।

ANS- (A) सामोद-दामोदरः

व्याख्या: जयदेव के गीतगोविन्द का प्रथम सर्ग **सामोद-दामोदरः** है। इसमें दशावतार की स्तुति और कृष्ण का वर्णन है। गीतगोविन्द में बारह सर्ग हैं और हर सर्ग का अपना नाम है।

मुख्य बिंदु:

- ♦ **कवि:** गीतगोविन्द के कवि जयदेव हैं।
- ♦ **स्थान:** जयदेव ओडिशा के केन्दुली गाँव के माने जाते हैं।
- ♦ **रचना-रूप:** इसके गीत अष्टपदी कहलाते हैं।

अन्य विकल्प:

- (B) **धृष्ट-वैकुण्ठः** — यह गीतगोविन्द के एक अन्य सर्ग का नाम है।
(C) **नागरनारायणः** — यह भी इसी काव्य के एक अन्य सर्ग का नाम है।
(D) **एतेषु कोऽपि नास्ति** — यह विकल्प नहीं बनता, क्योंकि (A) ठीक नाम है।





ଓଡ଼ିଶାର ସମସ୍ତ ପୂର୍ବ ବର୍ଷର ପ୍ରଶ୍ନ ଉତ୍ତର ପାଇଁ
Download “**Tech Of World**” App



Call/WhatsApp-
8596976190

★ UNLOCK ALL HIGH SCHOOL TEACHER PYQ ★

You just solved 10 questions. 6,300+ more solved PYQ are waiting for you.

COMBO - ଓଡ଼ିଶା
ପୂର୍ବ ବର୍ଷ ପ୍ରଶ୍ନ

63,453 - PYQ

1,157 - TEST

ପୂର୍ବ 10 ବର୍ଷର
OSSSC, OSSC, OPSC,
ପୋଲିସ, CT, B.ED, RHT

GK ODIA ENGLISH MATH COMPUTER REASONING PEDAGOGY

COMPLETE PREPARATION, COMPLETE SUCCESS!

COMBO (63000 PYQ)

Everything you need to crack OSSC RHT, LTR & SSB TGT

✓ 47 High School Teacher papers – RHT 2019 – 2023, LTR 2024-25 & SSB 2024

✓ 6,300+ questions solved step by step, with explanations

✓ Every stream – PCM, CBZ, Arts, Hindi, Sanskrit, PET & Odia

✓ BONUS: 63,453 PYQ + 1,157 Tests of OSSSC, OSSC, OPSC, Police, CT, B.Ed & RHT

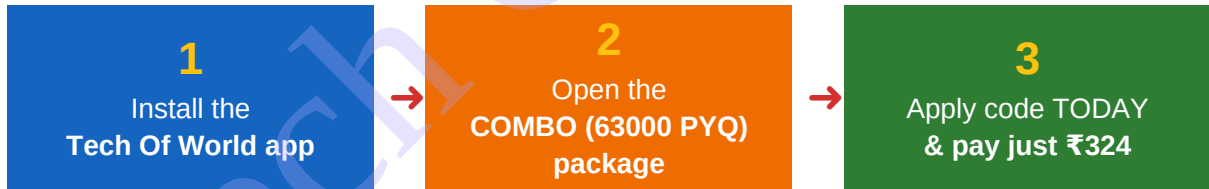
SPECIAL OFFER PRICE

Regular price ₹349

₹324 ONLY

Use code **TODAY** & save 7% today

GET IT IN 3 EASY STEPS



Scan the QR code or tap the button to download

▶ **DOWNLOAD TECH OF WORLD APP**

Need help? WhatsApp: 8596976190 | techofworld.in

★ 4.6

Rating on Google Play

1,00,000+

Downloads on Google Play

24-hour

Refund system

Practise the real High School Teacher questions — start today with code **TODAY**

